

भारतीय संगीत और अध्यात्मिक का संबंध

Dr. Rakesh Kumar Mishra*

Principal, Department of Music, Shyam Nandan Sahay College, Muzaffarpur, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सार – ध्वनि संगीत-निर्माता और संगीत-प्रेमी के बीच एक अध्यात्मिक संबंध बनाता है। संगीत मानवीय भावना के भीतर प्रतिध्वनित होता है। मानवता के दिल में एक गीत है। संगीत का अध्यात्मिक महत्व समुदायों, संस्कृतियों, और पंथों को पार कर सकता है। एक संगीतकार हमेशा के लिए अध्यात्मिक हो जाता है क्योंकि वह स्पर्श धुनों में होता है। हालांकि, नियमित अभ्यासों के दौरान और परिश्रम को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हुए, वह अपने निरंतर अतिक्रमण और अध्यात्मिकता के प्रति सत्य के मूल्य को महत्व नहीं दे सकता है। सुखी सामाजिक उपलब्धियों और आत्म-संतुष्टि के बीच ठीक संतुलन बनाए रखने के लिए, वह आंतरिक रास्ते से लड़खड़ा सकता है और सांसारिक सफलता की ओर बढ़ सकता है। हाल के भारतीय शास्त्रीय संगीत में, ऐसे रूपों की अधिकता है जो संगीत की धुनों और ध्वनियों के माध्यम से अध्यात्मिक आभा के भीतर निवास करने और प्राप्त करने में मदद करते हैं। इस पत्र में, पहले से ही कई रुझान और नई (आगामी) भारतीय विविध रूपों की शैलियों की चर्चा की गई है, जो व्यवसायिक होने के अलावा, अक्सर अपने भीतर मदद करने के लिए और संगीत के माध्यम से भीतर और देवत्व को खोजने के लिए मदद करते हैं।

कुंजी शब्द: भारतीय संगीत, अध्यात्मिक, ध्वनि संगीत

-----X-----

परिचय

भारत का संगीत दुनिया की सबसे पुरानी अखंड संगीत परंपराओं में से एक है। इस प्रणाली की उत्पत्ति वेदों से हुई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास के विषय में कई अलग-अलग किंवदंतियाँ बड़ी हैं। इस तरह की किंवदंतियाँ भारतीय संस्कृति को संगीत का महत्व बताती हैं। आधुनिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधान ने भी क्षेत्र पर एक अच्छा दृष्टिकोण दिया है, जिसमें दिखाया गया है कि भारतीय संगीत ने विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के विभिन्न लोगों के बीच एक बहुत ही जटिल बातचीत के भीतर विकसित किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान भारत की जातीय विविधता आदिकाल से रही है। भारतीय संगीत का आधार संगीत है। संगीत तीन कलाकृतियों का एक संयोजन है: मुखर संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य। हालाँकि ये तीनों कलाकृतियाँ मूल रूप से स्टेजक्राफ्ट के एकल क्षेत्र (धारा 1.3 देखें) से ली गई थीं, आज इन तीनों रूपों ने जटिल और उच्च परिष्कृत व्यक्तिगत कलाकृतियों में विभेद किया है।

म्यूजिकल साउंड क्या है?

माइकल लिंटन ने परिभाषा को एक कदम आगे बढ़ाया: “ध्वनि और संगठन के रूपों में जो सांस्कृतिक रूप से व्युत्पन्न अर्थों को ले जाते हैं, सौंदर्यवादी उपयोगितावादी उद्देश्यों के लिए खेती की जाती है”। यह मानव आयोजन तत्व संगीत की हमारी समझ के लिए महत्वपूर्ण प्रतीत होता है - हालांकि गैर-मानव एजेंटों द्वारा निर्मित ध्वनियों, जैसे कि जलप्रपात या पक्षी, को “संगीत” के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है, लेकिन शायद ही कभी प्संगीतष् के रूप में।

संगीत और अमूर्तता

संगीत एक घटना के बजाय एक विचार, एक अवधारणा है। यह गैर-लेखन योग्य है, या सांख्यिकीय तरीके से वर्णित है। संगीत केवल माना जा सकता है और धारणाएं व्यक्ति को अपनी संगीत, सांस्कृतिक और भावनात्मक यात्रा के अनुसार अलग-अलग कर सकती हैं। ओशो कहते हैं, “संगीत ध्यान की सबसे आसान विधि है। जो कोई भी संगीत में अपने आप को घोल सकता है उसे भंग करने के लिए किसी और चीज की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

अमूर्तता और मनमुटाव

आइए विचार को संयम के रूप में अमल में लाएं। हर अमूर्त और ठोस चीज का शरीर और मन पर प्रभाव पड़ता है जो कि अमूर्त है। “संगीत को सुखद” (एस्थेटिक स्तर द्वारा निर्धारित) या ‘मैलोडिक’ (तत्कालीन और/या एस्थेटिक स्तरों द्वारा निर्धारित) होने की उम्मीद है। यह देखने के लिए अक्सर तर्क दिया जाता है कि ध्वनि के मात्रण को संगीत की आवश्यकता नहीं है।

संगीत हमें मानसिक रूप से, या वर्तमान में रहने में मदद करता है। धुनें हमें उसी क्षण ध्यान केंद्रित करती हैं और सभी सांसारिक अतीत और भविष्य के विकर्षणों से छुटकारा दिलाती हैं। जब हम हर समय वर्तमान में रहना सीखते हैं, तो हम अपने ‘पूर्ण अस्तित्व’ में रहना सीखते हैं और हम वास्तविक आनंद के स्तर पर पहुंचते हैं या ‘जीवंत आनंद’। वर्तमान अवस्था में होने वाला यह विचारधारा आध्यात्मिकता और दिव्यता का मार्ग है। इसलिए, संगीतकारों को आत्मज्ञान और आंतरिक शांति प्राप्त करने के उच्चतम स्रोत में से एक माना जाता है। संगीत की धुनों का उपयोग ध्यान करने वाले औजारों के रूप में और लोगों को चंगा करने के लिए किया गया है।

संगीत और चेतना

एक संगीतकार का जीवन पूरी तरह से उसके अभ्यास के लिए समर्पित होता है, अर्थात् स्वार-साधना। धुनों के साथ लंबी प्रथाओं और संबंधों के दिन और दिन उसे अपने क्षेत्र में न केवल जटिल बनाते हैं, बल्कि ज्ञान और उदारता में तुलनात्मक रूप से मजबूत होते हैं। इस प्रकार, हम देखते हैं कि संगीत कलाकार या प्रेमी लोग तुलनात्मक रूप से बात करने के लिए सहज होते हैं। विशेष रूप से संगीत चिकित्सक चिकित्सा डॉक्टरों की तुलना में स्वीकृति और प्रेमपूर्वक देने में सक्षम हैं। चेतना के साथ ध्वनि का संरेखण अक्सर समुदाय गायन, नृत्य, ढोलक आदि के माध्यम से प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है। अमाशियान हमेशा आध्यात्मिक आभा में रहता है या इससे जुड़ा होता है। उच्च स्वर, ध्वनियों और उसकी रचनात्मकता के संपर्क में होना।

नाडा योग: इनर एंड आउटर म्यूजिक

नाडा योग संगीत को दो श्रेणियों में विभाजित करता है: आंतरिक संगीत या अनाहत और बाहरी संगीत या आहत। जबकि बाहरी संगीत को अर्थ ऑर्गेज्म के माध्यम से सुना जाता है। कान, जहां यांत्रिक ऊर्जा को इलेक्ट्रो केमिकल एनर्जी के रूप में परिवर्तित किया जाता है, मस्तिष्क द्वारा माना जाता है,

भीतर का संगीत सूक्ष्म हृदयचक्र के रिसेप्शन का कारण बनता है, जिसे अनाहत चक्र भी कहा जाता है, जो कि नहीं है एक संवेदी अंग। इसके नाम के रूप में, अनाहत का अर्थ है अपने स्वयं के ध्वनि कंपन, जो किसी के स्वयं के इतने करीब है कि कोई और इसे साझा नहीं कर सकता। नाडा योग की प्रणाली आंतरिक संगीत के अभ्यासी को परिणामी सद्भाव, विश्राम जाँय डे विवर का आश्वासन देती है, लेकिन आत्म-साक्षात्कार का भी वादा करती है, जो अक्सर, स्वच्छता का कार्य करने वालों के लिए एकवचन होता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के तत्व और उनके आध्यात्मिक संबंध

बढ़ी हुई तर्कसंगतताओं और विज्ञान और विज्ञान के अत्यधिक उपयोग की इस नई दुनिया में, भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रारूप, समय-अवधि, समकालीन श्रोताओं के अनुसार संकुचित और संकुचित हो गए हैं, हालांकि, विषयगत नोट, इसका प्रभाव, प्रतिध्वनि, वही बना हुआ है। यदि कोई व्यक्ति संगीत की धुनों के संपर्क में है, तो हर व्यक्ति सेकंड के हर हिस्से तक पहुँच जाता है, शायद अवचेतन रूप से। आध्यात्मिक विकास के लिए संलग्न हैं। इस शैली में किए गए भजनों की वेदों और हिंदू पौराणिक कथाओं में मजबूत जड़ें हैं। राग, ताल और स्वार के मुख्य घटक धर्म की अवधारणा के लिए एक उपकलाकार में गीत के संतुलन के लिए प्रयास करते हैं।

ओम-संशोधन और मंत्र-जप

युगों से, जागरूकता के साथ या नहीं, ओम प्रतिपादन और मंत्र-उच्चारण आध्यात्मिकता, संगीत और धर्म (हिंदू धर्म) का महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। अब शोधकर्ता वैज्ञानिकता और नियमित मंत्र-जप का समापन कर रहे हैं। “ध्वनि के तत्वमीमांसा, जिसे भारत में मंत्रम और द के रूप में तकनीकी रूप से जाना जाता है जापम तकनीक और ध्वनि के मूल सिद्धांतों का उपयोग है, मन को सभी समयों, और सभी स्थानों की कुल जागरूकता से मुक्त करने के लिए, और कालातीत और अंतरिक्ष कम स्थिति जो शाश्वत मेट्रिक्सो है जो सभी सृजन विघटन में लौटता है।

उम के बाद से, जागरूकता के साथ या नहीं, ओम प्रतिपादन और मंत्र-उच्चारण आध्यात्मिकता, संगीत और धर्म (हिंदू धर्म) का महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। अब शोधकर्ता वैज्ञानिकता और नियमित मंत्र-जप का समापन कर रहे हैं। “ध्वनि के तत्वमीमांसा, भारत में तकनीकी रूप से मन्त्रम और दजापम तकनीक और ध्वनि के मूल सिद्धांतों का उपयोग है, मन को

सभी समयों, और सभी स्थानों की कुल जागरूकता से मुक्त करने के लिए, और कालातीत और अंतरिक्ष कम स्थिति जो शाश्वत मेट्रिक्सो है जो सभी सृजन विघटन में लौटता है जिस तरह से ध्वनि हमें वैदिकसूत्र पर अपनी टिप्पणी में स्वामी भक्ति वेदांत द्वारा स्पष्ट रूप से पारलौकिक वास्तविकताओं से संपर्क करने का अवसर दे सकती है। ओम, प्रणव, ओमकारा, तीन निरपेक्षों द्वारा गठित पवित्र शब्दांश - A-U-M- कुंजी, अंतरंग आत्म-साक्षात्कार का बीज है। एक श्वास को विनियमित करते हुए, इसे आध्यात्मिक रूप से याद करते हुए- एक आध्यात्मिक निर्मित और अभ्यास किया गया योगी और जिसके माध्यम से व्यक्ति गहन ऑक्सीजन युक्त अवस्था प्राप्त करता है- जो कि मामले के तरीकों पर हावी मानसिक प्रक्रियाओं को संभव बनाता है।

श्रुति और स्वर

22 श्रुतियाँ या ध्वनि आवृत्तियाँ संगीत का आधार हैं। ये 22 श्रुति संगीत के लिए चुनी गई सुखद ध्वनियाँ हैं जो सात शुद्ध-स्वरों का चयन करती हैं- सा रे गा मा पा ध नी। सात नोटों के बारे में, जो सामान्य रूप से जानते हैं, जो सात रंगों और सात चक्रवित्तिन प्रणाली से संबंधित हैं, बाईस श्रुति सूक्ष्म नोट हैं - ये नोटों के बीच के नोट हैं! स्ट्रिंग पर अनुपात बनाने वाली संख्याएँ अभाज्य संख्याओं के गुणक हैं - एक, दो, तीन और पाँच - यह भी अंतरिक्ष के तत्व को छोड़ते हुए फॉरेस्टल का प्रतिनिधित्व करता है।

सद्गुरु कहते हैं, “आपको समझने की जरूरत है, एक भारतीय शास्त्रीय संगीतकार सेट के टुकड़ों को देख रहा है। वे एक राग के साथ शुरू करते हैं, जो एक निश्चित बुनियादी पैटर्न है। हालांकि, व्यक्तिगत संगीतकार के कौशल के आधार पर, वह एक संपूर्ण गढ़ बनाता है, और इस गढ़ का गणितीय आधार है। आज हम जानते हैं कि आधुनिकता के अनुसार, ब्रह्मांड में हर संरचना को एक गणितीय अवरोध तक कम किया जा सकता है। यह रीढ़ की हड्डी या अस्तित्व का खाका है।

ताला

ताल और इसका प्रभाव पूर्ण विश्व पर है अस्तित्व में हर चीज के बारे में एक लय है। यहां तक कि अमानवीय धारणा के संदर्भ में, गहरे स्तर पर नहीं, अगर आप ध्यान से सुनें तो इसमें एक लय है। किसी भी चीज से निकलने वाली ध्वनि की एक निश्चित लय होती है। इफथेयर हर ध्वनि की एक लय है जिसे आप सुनते हैं, जाहिर है, इसमें एक ताल है जो ध्वनि का कारण बनती है। शदगुरु ताल की एक संपूर्ण आध्यात्मिक परिभाषा

प्रदान करता है, “एक आयाम के रूप में, यह बोली जाती है कि मानव शरीर शिव का है डमरू (ढोल)। शिव ने हमेशा ढोल बजाया क्योंकि यह जीवन की लय का प्रतीक है। जब आप एक दौड़ चलाते हैं या जब आप उत्तेजित होते हैं या डरते हैं, तो आप अपने सिर में ‘धू, धू, धू’ सुनते हैं। यह शरीर की लय है। शरीर की लय सिर्फ दिल की धड़कन नहीं है। शरीर में हर फाइबर और हर प्राणिक नाड़ी का अपना एक अलग स्थान है। हर एक चक्र की अपनी ध्वनि है। ध्वनि क्या है और आपका रूप क्या है दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। ध्वनि और शरीर के बारे में एक संपूर्ण विज्ञान है, जो विभिन्न ध्वनियों के उच्चारण को देखता है या विभिन्न ध्वनियों के अंतर्ग्रहण के तहत होता है जो सिस्टम को करता है”

राग

सितार वादक पंडित रविशंकर बताते हैं: “एक राग एक कलाकार की आंतरिक भावना का प्रक्षेपण है, जो उसकी सबसे गहरी भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है, जो स्वर और धुन के माध्यम से सामने आया है। संगीतकार को प्रत्येक राग में प्राण फूंकना चाहिए क्योंकि वह उसे प्रकट और विस्तारित करता है। 90 प्रतिशत भारतीय संगीत में सुधार किया जा सकता है और क्योंकि बहुत कुछ कला की भावना और बारीकियों को समझने पर निर्भर करता है, कलाकार गुरु के बीच का संबंध इस प्राचीन परंपरा का मूलमंत्र है। शुरुआत से, थिसॉरसिंग संगीतकार को कलात्मक महारत हासिल करने के लिए विशेष और व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता होती है। एक राग की अनूठी आभा (कोई “अपनी आत्मा” कह सकता है) इसकी आध्यात्मिक गुणवत्ता और अभिव्यक्ति का तरीका है, और इसे किताब से नहीं सीखा जा सकता है।

प्रसिद्ध सितारवादक, निलाद्री कुमार ने रागों को व्यक्त करते हुए कहा: “राग भावनाओं से बात करते हैं और कहा जाता है कि क्रोध के अलावा किसी भी भावना का भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रतिनिधित्व किया जा सकता है,” करुणा। भैरव राग दुःह या प्रातःकालीन है और साहस का प्रतिनिधित्व करता है। श्री राग शरद ऋतु के दृश्य के लिए है और दो लोगों और गहरी भावनाओं के बीच प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है। (Leante189) बंदिश

भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो पहलू हैं। एक थैरेगस और रचनाओं को सुन रहा है और संगीत की बारीकियों का आनंद ले रहा है। दूसरे पहलू में रचनाओं के अर्थ को समझना शामिल है जो हमारे जीवन और हमारी प्राथमिकताओं पर

हमारे दृष्टिकोण पर प्रभाव डाल सकता है। आध्यात्मिकता भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अविभाज्य घटक है। कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति (त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार और श्यामा शास्त्री) और अन्य संतों ने भगवान की भक्ति के लिए गाया। यह उनके दिलों की गहराई से आया है। उन्होंने पैसा कमाने के लिए गाने नहीं लिखे

संगीत शैलियों के साथ आत्मा का संबंध: संगीत समारोहों में जुगलबंदी

संगीत के सभी रूप- चाहे वह लोक हो या शास्त्रीय, जातीय या परिष्कृत - ऐसी विशेषताओं को प्रकट करते हैं, जिन्हें ब्याने के इच्छुक श्रोता अनुभव कर सकते हैं। कभी-कभी संगीत में यह शंवादश कई उपकरणों की आवाजों और स्वरों के बीच एक "अंतर" भी बन सकता है। जुगलबंदी यह बताती है कि संगीत के रूप में अंतरंग बातचीत। इसे 'सवा-जवाब' सत्र भी कहा जाता है। हिंदुस्तानी जुगलबंदी में ऐसे तमस झगड़े 'वाले तत्व शामिल होते हैं, जो बेशक सौहार्दपूर्ण ढंग से और श्रोता के मन में बहुत खुशी के साथ होते हैं। यह सवाल-जवाब पैटर्न या तनाव-संकल्प पैटर्न दुनिया भर में सर्वव्यापी रूपों के लिए सार्वभौमिक है। सांस लेने की दिनचर्या में भी, हम थिस्टेशन-रिजॉल्यूशन पैटर्न को शामिल करते हैं। जैसा कि हम एक गहरी सांस लेते हैं, हम ऑक्सीजन में खींचते हैं, जिससे शरीर के भीतर तनाव होता है। एक बार जब हम सांस लेते हैं, तो यह तनाव दूर हो जाता है और इससे राहत मिलती है। हाल के कुछ शोधकर्ताओं ने नोट किया है कि संगीत में अनुवर्ती तनाव निर्मित और उपचारात्मक संकल्प दिमाग में नाड़ी के विद्युत कोड में अनुवादित हो जाते हैं।

लोक संगीत:

मनुष्य ने समुद्र, पृथ्वी, गरज, बादल, और वर्षा से विस्मय और आश्चर्य किया है। अंतहीन सागर के सामने खड़े होकर उसने छोटा महसूस किया है वह झुक गया है। हेकोल्ड ने बादलों को गले नहीं लगाया, लेकिन मल्हार गाया है। वह विशाल पर्वतों पर नहीं चढ़ सकता था, लेकिन उसने अपनी बाजी खेल ली थी-पहाड़ी धूने ने पहाड़ की कुंडली गूँज दी थी। 'लोक संगीत संस्कृति का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न माध्यम है, जो जीवन के देहाती तरीकों का एक वास्तविक अर्थ है। यह स्थानीय संस्कृति का एक सहज चित्रण है जो एक जीवित कला है। यह सच है कि लोक संगीत गैर-शैक्षणिक और कम अनुशासित रूप है, लेकिन फिर इसकी निरंतरता को खोए बिना आनंद, दुःख, परंपराओं और विश्वासों की इसकी सतत अभिव्यक्ति एक बहुत ही संपादन का अनुभव है। (II) लोक गीत और नृत्य, नाम

के रूप में 'A लोक "(द्रव्यमान) निरूपित करते हैं, क्योंकि ये मूल रूप से उत्पन्न हुए थे और इसे आम लोगों द्वारा पूरे दिल से गाया जाता था। एवरकल्चर, रीजन, और कंट्री का अपना लोक संगीत है, जिसमें उनकी अपनी सहज शैली, उच्चारण, बोली, ताल, मीटर और पिच हैं। लोक संगीत, जब से लोगों के लिए बनाया गया है, लोगों के लिए, जीवन शैली, विचार-प्रक्रिया, स्वभाव, अनुष्ठान, जाति पंथ और यहां तक कि ड्रेस-कोड का चित्रण करता है। यह संगीत के किसी भी नियम-कानून को नहीं मानता है, इसलिए, यह आम जनता के लिए बेहद अंतरंग, धाराप्रवाह, आकस्मिक है।

लोक व्याकरण से अछूता संगीत की स्थिति है, संगीत से जुड़ा हुआ है यह एक ऐसा संगीत है जो लोगों के बीच से निकलता है। बाहर फटने का एक कार्य है - संस्कारों द्वारा वातानुकूलित भावनाओं के अनजाने शिकार से खुद-ब-खुद। हालांकि, ज्ञात यह है कि जहाँ भी और जब भी दिल धड़कता है, वहाँ संगीत होता है। (III) फोक बहुत हवा है जिसमें मनुष्य साँस लेता है, संगीत में आत्मा भीगने के साथ शुद्ध ध्वनियाँ प्रवाहित होती हैं। जिस कच्चापन के साथ वह फूटता है वह उसकी सुंदरता और वह है जिसके साथ वह ऐसा करता है, अभिव्यक्ति का एक अनिवार्य तत्व।

हाल ही में संगीत धाराएँ और उनके आध्यात्मिक ध्यान संगीत थेरेपी

गैर-आक्रामक समग्र दवा के रूप में संगीत की बढ़ती भूमिका मानव जाति के सामने आने वाली शारीरिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को दूर करने के लिए एक भरोसेमंद पूरक चिकित्सा प्रणाली के रूप में इसके महत्व को बताती है। समाज में हाल के विकास जैसे कि प्रवासन, शहरीकरण, वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा, मस्तिष्क संबंधी गतिविधियों और सामान्य जेट-सेटिंग की आदतों ने सभी को जीवन शैली की गति में योगदान दिया है जो सामान्य जैव-लयबद्ध वेग या मानवजातिवाद में स्थापित क्षमता से बहुत आगे निकल जाता है। चूँकि पृथ्वी पर इसकी उपस्थिति के बाद से संगीत चिकित्सा अब आसानी से एक वैकल्पिक गैर-इनवेसिव उपचार के रूप में इस्तेमाल की जा रही है, जो बच्चों में जन्म, बच्चों में मानसिक विकृति, बाल शिक्षा, मनोभ्रंश सहित मानसिक विकारों, बुजुर्गों में पार्किंसंस रोग जैसी कई स्थितियों के नियमित उपचार के लिए है।, टर्मिनल बीमारी के मामलों में, रिड्यूकेस्ट्रेस और बीमारियों के लिए। यह देखा गया है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों का उपचार प्रभाव पड़ता है। भारतीय संगीत चिकित्सा या राग-चिकातस संगीत के सबसे आध्यात्मिक, उन्नयन और व्यावसायिक

क्षेत्र में से एक है। राग मस्तिष्क को उत्तेजित करते हैं, तनाव में तनाव को दूर करते हैं और थकान को दूर करते हैं। संगीत का प्रभाव कुछ कारकों पर निर्भर करता है जैसे व्यक्ति की मानसिकता, पर्यावरण और संगीत का प्रकार और निश्चित रूप से राग का विचलन। यद्यपि हम एक विशिष्ट बीमारी के लिए एक राग स्थापित नहीं कर सकते हैं। प्रत्येक अलग मामले में विभिन्न प्रकार के राग लगाए जाते हैं।

सिमैटिक्स

सिमैटिक्स 'पैटर्न बनाने में ध्वनि के प्रभाव का अध्ययन है। इस विज्ञान के अनुसार, पिच को बदलकर, स्वर और मादक द्रव्यों का सामंजस्य हिल रहा है, अनंत रूप और आकार प्राप्त किए जा सकते हैं, जो कोशिकाओं पर ध्वनि तरंगों की भूमिका की पुष्टि करता है ऊतकों और अंगों के रूप में अच्छी तरह से। इस तरह के उपचारों के आधार पर, हाल के वर्षों में गठिया, गठिया, पीठ दर्द, पोस्ट-ऑपरेटिव हीलिंग, खेल-चोटों, फ्रैक्चर और मांसपेशियों की चोट जैसी कुछ स्थितियों को चिकित्सकीय रूप से विकसित करने के लिए एक चिकित्सा प्रणाली विकसित की गई है। दर्द निवारक के अलावा, इन प्रयासों से किसी की गतिशीलता में सुधार की सूचना है।

संगीत और चक्र-कनेक्शन

वेदों में शरीर के सात चक्रों का उल्लेख किया गया है जो शरीर के विभिन्न कार्यों को नियंत्रित करते हैं। थेसेक्राक्स शरीर की विभिन्न नाड़ियों का उल्लेख करते हैं और ये नाड़ियाँ योगासनों के साथ-साथ संगीत से भी उत्तेजित हो जाती हैं। शास्त्रीय संगीत के सात नोट 7 चक्रों को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, संगीत को अक्सर प्राचीन काल से चिकित्सीय एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। संगीत एक तरह का योग है, जो नोटी.आई की अच्छी तरह से परिभाषित प्रणाली के माध्यम से होता है। राग जो मानव जीव पर कार्य करते हैं और आत्म-साक्षात्कार की सीमा तक उनके उचित कार्य को जागृत और विकसित करते हैं। यह हिंदू दर्शन और धर्म का अंतिम लक्ष्य है। संगीत वेदों में वर्णित सबसे महान विषयों में से एक है। ब्रह्मांड में शास्त्रीय संगीत का सकारात्मक प्रभाव है। ऐसे कई उदाहरण हैं जो इस बात का समर्थन करते हैं कि संगीत में भारी ऊर्जा होती है जो हम पर इतने प्रभाव पैदा करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि प्रकृति संगीत द्वारा सृष्टि का संचालन करती है। संगीत के नोट्स प्रकृति से ही प्राप्त हुए हैं

बाइनॉरल बीट्स:

ज्व बिन्यूरल बीट्स 'एक शब्द है जिसे ऑडियो उत्तेजना के साथ पेश किए जाने पर मस्तिष्कशीलता में एक मापा बदलाव के लिए दिया जाता है। जब किसी व्यक्ति को एस्ट्रो ध्वनि के साथ दो अलग-अलग स्वरों के साथ प्रस्तुत किया जाता है - मस्तिष्क एक प्रतिक्रिया (बाइनायरल बीट) उत्पन्न करता है जो स्वरों के बीच अंतर को सुन रहा है और प्रतिक्रिया दे रहा है, न कि स्वयं थिएकॉन टोन। संक्षेप में, जब हेडफोन का उपयोग करते समय बाएं और दाएं चैनलों में टोन (या हमारे उत्पाद सत्र में, पिच में अंतर) होता है - तो आपके दिमाग की गतिविधि में बदलाव होता है। आपकी मस्तिष्क तरंग गतिविधि टोन में अंतर की नकल करती है और आप तनावमुक्त हो जाते हैं। यदि बीनायरल बीट्स एक कृत्रिम निद्रावस्था वाले ट्रान्स राज्य की समान आवृत्ति पर हैं, तो आप इस राज्य में हैं।

आध्यात्मिकता तथा संगीत का संबंध: के अनुसार जी.एच. प्रो। पी। एस। सत्संगी साहब 9, "शिक्षा के तीन स्तर हैं: संस्थापक शिक्षा स्तर। प्राथमिक स्तर या मध्य विद्यालय स्तर, यहाँ शिक्षण तीन प्रसिद्ध, पठन, लेखन और अंकगणित के माध्यम से होता है जब हम उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा और वैज्ञानिक स्वभाव और वैज्ञानिक पद्धति के लिए आगे बढ़े हैं, तो यह शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। विज्ञान की तीन विशेषताओं का एक और सेट, Reductionism: जो विज्ञान की विश्लेषणात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, प्रयोग की पुनरावृत्ति, जो विज्ञान की ताकत और परिकल्पना का खंडन है, जिसके माध्यम से विज्ञान ने आधुनिक दुनिया में अपनी शानदार प्रगति की है और क्या आज हम गवाह हैं कि दूरसंचार के क्षेत्र में विज्ञान की इन उन्नतियों का लाभ उठाने के परिणामस्वरूप ही यह संभव हुआ है। फिर तीसरा स्तर है और यह आध्यात्मिक शिक्षा का उच्चतम स्तर है और इस भौतिक या भौतिक दुनिया से परे शिक्षा है, यानी हम "APARA VIDYA TO PARA VIDYA" से चलते हैं। हम ब्रह्मानंद के पारलौकिक ज्ञान या निर्मल चेतन देश के अल्ट्रा ट्रान्सेडेंटल ज्ञान के लिए जाते हैं और राधास्वामी सत्संग के बारे में यही जानते हैं। तो यह उच्चतम स्तर पर आध्यात्मिक शिक्षा (विद्या) है। तो, वास्तव में, सत्संग और शिक्षा में कोई भेद नहीं है। वे विभिन्न स्तरों पर हैं। यह डिग्री में भिन्नता का विषय है"।

राग और भावना

प्रो.पी.संबामूर्ति के अनुसार, राग और भावना का विषय 'अध्ययन की एक आकर्षक शाखा है। कोई भी कला भावनाओं

को इतनी गहराई से संगीत के रूप में प्रस्तुत नहीं करती है। संगीत ने भावना की भाषा को सही ढंग से स्टाइल किया है। संगीत के माध्यम से रसानुभव एक विशिष्टता है और इसका 406 मनोवैज्ञानिक आधार है। संस्कृत में संगीत और प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल के दौरान लिखे गए ज्ञानवर्धक ग्रंथों का उल्लेख है, लेकिन उनमें से कुछ ने इस विषय को लंबाई में निपटाया है। साहित्य में Subject रस का विषय 'साहित्य और नाटक में रस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया है। संगीत रासा या भावना के चित्रण के लिए एक शक्तिशाली वाहन है। रासा सार्वभौमिक महत्व का विषय है। रस का विचार भारतीय सौंदर्यशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं में से एक है। नौ रसों को प्रभावशाली रूप से कुछ प्राचीन मूर्तियों और चित्रों में दर्शाया गया है। रस का विषय भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में माना है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय संगीत और अध्यात्मिक का संबंध का अध्ययन
2. संगीत धाराएँ और उनके आध्यात्मिक ध्यान संगीत थैरेपी का अध्ययन

निष्कर्ष

'राग-ध्यान-मंत्र' की अवधारणा इस विचार को व्यक्त करती है कि राग केवल संगीत रचनाएं नहीं हैं, वे आध्यात्मिक मूल्यों को ग्रहण करते हैं जो शाश्वत और कभी भी स्थायी हैं। इस अवधारणा के तहत रागों में देवी और देवताओं को भी चित्रित किया गया है। मुनियों और ऋषियों द्वारा ऋग वैदिक भजनों का पाठ करते हुए, वेदों से स्वर का विकास होता है। रागों को पारंपरिक रूप से मंदिरों और अन्य पूजा स्थलों के साथ जोड़ा गया है। सृष्टि में भव्य विभाजन के विभिन्न आध्यात्मिक क्षेत्रों में निकलने वाली ध्वनियों में वीणा, बांसुरी, बीन, मृदंग आदि वाद्ययंत्रों के माध्यम से समान सांसारिक ध्वनियाँ हैं। ये वर्णन पवित्र पुस्तकों में पाए जाते हैं। इसलिए राग और अध्यात्म अविभाज्य तत्व हैं। आध्यात्मिकता उच्चतम स्तर है, आध्यात्मिकता सर्वोच्च है और सर्वोच्च होने के नाते रस (ब्रह्मानंद) बिना रस के कोई भी शरीर एक चीर की कल्पना नहीं कर सकता है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संगीत एकमात्र पुल है जो हमें उच्चतर स्थानों की झलक देकर सांसारिक और आध्यात्मिक अनुभव को जोड़ता है।

संदर्भ

1. साईराम, टी। वी। (2006)। म्यूजिक थैरेपी: साईराम, टी। वी। (एड।) म्यूजिक-थैरेपी: द सेक्रेड एंड द प्रोफेन में मेंटल रिटायर्ड (डट) बच्चे के लिए डिजाइनिंग ट्रेनिंग मेथड्स। (पीपी। 74 - 78)।
2. साईराम, टी। वी। (2006)। स्व-संगीत थैरेपी: नाडा सेंटर फॉर म्यूजिक थैरेपी, चेन्नई। सैराम, टी। वी। (2005)। राग चिकित्सा। चेन्नई। नाडा सेंटर फॉर म्यूजिक-थैरेपी।
3. शर्मा, मनोरमा। (1996)। विशेष शिक्षा: संगीत थैरेपी सिद्धांत और अभ्यास नई दिल्ली: एपीएच प्रकाशन निगम।
4. शर्मा, प्रेमा लता। (1992)। श्री मातंग मुनि की बृहददेसी। नई दिल्ली, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र।
5. सुमति, सुंदर और साईराम, टी। वी। (2005)। भारत में संगीत थैरेपी परंपराएं। आवाज: संगीत चिकित्सा के लिए एक विश्व मंच। से लिया गया
6. सुमति, सुंदर (2005)। क्या पारंपरिक हीलिंग सिस्टम संगीत थैरेपी के साथ एकीकृत हो सकते हैं? सुमति सुंदर ने टी। वी। साईराम का साक्षात्कार लिया। वीडियो": म्यूजिक थैरेपी के लिए एक विश्व मंच। दिनांक 12 अगस्त, 2013 से <http://www-voices-no/mainissues/mi40005000186.html>
7. सुंदर, सुमति (2005)। एक गैर चिकित्सा संशोधक और विकिरण प्रभाव के रक्षक के रूप में संगीत थैरेपी। एसोसिएशन ऑफ रेडिशन ऑन्कोलॉजिस्ट्स ऑफ इंडिया कॉन्फ्रेंस, मदुरई के कॉन्वेंट ऑफ कॉन्फ्रेंस-इन-एसेन्स
8. सुमति, (2004)। सिर और गर्दन के कैंसर चंपमदजे के साथ मनोवैज्ञानिक परामर्श के प्रभाव। काउंसलिंग में डिप्लोमा के लिए संयुक्त प्रकाशित शोध प्रबंध। चेन्नई।
9. सुंदर, सुमति (2006) म्यूजिक थैरेपी इन इंडिया: म्यूजिकल प्रिव्यूज पर जनरल गाइडलाइन्स एंड म्यूजिक सिलेक्शन के लिए अप्रोच। में

10. साईराम, टी। वी। (एड।) म्यूजिक थेरेपी द सेक्रेड एंड द प्रोफेन। (चच.91-97) चेन्नई, भारत: नाडा सेंटर फॉर म्यूजिक थेरेपी।
11. सुंदर, सुमति (2006)। उन देशों में सक्षम संगीत चिकित्सा, शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए मानकों का परिचय कैसे करें, जहां संगीत चिकित्सा विकास के प्रारंभिक चरण में है। आवाज: संगीत चिकित्सा के लिए एक विश्व मंच
12. 2 दिसंबर, 2007 को [http: / /www-voices-no/mainissues/mi40006000212-html](http://www-voices-no/mainissues/mi40006000212-html) Sundar] Sumathy से लिया गया। (2006) संगीत चिकित्सा और परामर्श के प्रभाव: एक सीए - हाइपो ग्रसनी रोगी की राज्य चिंता का मामला। संगीत थेरेपी आज (ऑनलाइन) वॉल्यूम। VII (1) 8-29। 8-29A <http://www-Music&TherapyWorld-net> पर उपलब्ध है।

Corresponding Author

Dr. Rakesh Kumar Mishra*

Principal, Department of Music, Shyam Nandan Sahay College, Muzaffarpur, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur